साठ साल की औरत

मृदुला गर्ग

कहानी

साठ साल की औरत

मृदुला गर्ग

सुरभि घोष ने अपनी एक कहानी में लिखा था, साठ की होने पर औरत निरापद हो जाती है। कुछ भी करे लोकापवाद नहीं होता। कितनी बेवक़ूफ़ी की बात थी। जैसे लोकापवाद का न होना औरत को निरापद करने को काफ़ी हो। और जो लोक से इतर अपना मनोजगत् है उसका क्या ? पर उसका आग्रह तो साठ की होने पर पता चलेगा न ? चालीस की उम्र में साठ इतनी दूर लगता है कि जो चाहो कह लो।

आज इक्कीस साल बाद, सुरभि घोष उसी शहर में है, जहाँ पहले-पहल डॉ. चन्द्रशेखर रामलिंगस्वामी से मिली थी। इतिहास के उन प्रोफेसर का नाम इतिहास की तरह लम्बा था। पर कहते उन्हें सब डॉ. चन्द्र थे।

इतिहासकार डॉ. चन्द्र से सुरभि घोष की मुलाक़ात एक गोष्ठी में हुई थी। जब उन्होंने उसे गिरजाघर ले चलने का प्रस्ताव रखा तो वे दोस्त क्या परिचित भी नहीं थे। नहीं, वे उसे पूजा या प्रवचन में नहीं ले जा रहे थे, सिर्फ़ इमारत दिखलाने। इतिहासकार डॉ. चन्द्र को अपने शहर की तारीख़ी इमारतों से ख़ास लगाव था। वे उन पर लिख-बोल कर भी काम चला सकते थे, चलाते भी थे। पर कभी-कभी आँख में उँगली डाल कर समझाने का दौरा पड़ जाता था। अलबत्ता, कभी-कभार। उस बार जब पड़ा तो सुरभि घोष सामने थी ।

'इस शहर में आयी हैं तो वह गिरजाघर देखे बग़ैर मत लौटिएगा', उन्होंने कहा था।

'वही क्यों ?' उसने पूछा था।

'अपनी तरह का वह अकेला गिरजा है।'

'अपनी तरह के तो सभी अकेले होते हैं', उसने तपाक से कहा था।

डॉ. चन्द्र ने इनकार नहीं किया था, पर हँसे भी नहीं थे। शायद वे कम हँसते होंगे।

गिरजाघर पहुँचने तक सुरभि के मन में सवाल, दलील, क़यास का सिलसिला, आदतन्, ख़ूब चला था। पर वहाँ पहुँचते ही सबकुछ बेख़याल, ख़ामोश हो गया था।

गिरजाघर पाँच मंज़िला है। दायें-बायें दो घुमावदार ज़ीने हैं। वे हर मंज़िल के बारजे पर जा कर